प्रतिदर्श प्रश्न पत्र–1

विषय : हिन्दी (ऐच्छिक)

कक्षा–XI

समय: 3 घण्टे **पूर्णांक : 80**

1. निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर दिए गए प्रश्नों का उत्तर दीजिए।

हिन्दी रंगमंच में गतिविधियाँ बढ़ रही हैं। रंग महोत्सव के अवसर पर रंगमंच पर नाटकों का प्रदर्शन होता है हिन्दी रंगमंच से अनेक अनूदित नाट्य रचनाओं को प्रस्तुत किया जा रहा है। हिन्दी में मौलिक नाटकों का अभाव है। रंगमंच की माँग पर हिन्दी लेखकों ने भी लिखना आरम्भ किया। अधिकांश लेखक, कहानीकार जब नाटक की रचना करते हैं तो कई बार विधागत भेद को भुला देते हैं। कहानी के पात्रों के सपाट संवादों को कह देने भर से वह कथावस्तु नाटक नहीं बन जाती। रंग नाटक वही होता है, जिसे मंच पर भली भाँति खेला जा सके। कविता या संगीत आदि के माध्यम से काव्य को समास शैली में प्रस्तुत करने पर भी कोई रचना नाटक नहीं हो जाती।

नाटक का अपना विधागत स्वरूप होता है। यह कहानी अथवा कविता के स्वरूप से भिन्न होता है। अभिनय प्रदर्शन, मंच सज्जा और नाटकीय कार्य व्यापार की प्रस्तुति से रंग नाटक बनता है। अत: रंग नाटक की रचना को रंग वस्तु की अपेक्षाओं के रूप में ही जाना पहचाना जा सकता है। कहानी का रूपांतरण हो या मौलिक रचना नाटक आपके रूप और रंग से देश में एक अलग साहित्यिक सत्ता रखता है।

प्रश्न–

(1)	हिन्दी रंगमंच पर अनूदित नाटकों की प्रस्तुति का क्या कारण हैं?	2
(2)	कहानी के पात्रों के सपाट संवादों से रंग नाटक क्यों नहीं बनता?	2
(3)	रंग नाटक की वस्तु को कैसे पहचाना जा सकता हैं?	2
(4)	रंग नाटक से क्या तात्पर्य है?	2
(5)	वर्तमान में हिंदी रंगमंच की क्या स्थिति हैं?	1
(6)	'साहित्यिक' शब्द में से प्रत्यय अलग कर एक नवीन शब्द बनाए।	1
(7)	गद्यांश को उचित शीर्षक दीजिए।	1

2. निम्नलिखित काव्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों का उत्तर दीजिए।

तिनका तिनका लाकर चिड़िया
रचती है आवास नया।
इसी तरह से रच जाता है
सर्जन का आकाश नया।
मानव और दानव में यूँ तो

https://www.evidyarthi.in

भेद नजर नहीं आएगा
एक पोंछता कहते आँसू
जी भर एक रुलाएगा।

रचने से ही आ पाता है
जीवन में विश्वास नया
कुछ तो इस धरती पर केवल
खून बहाने आते हैं।
आग बिछाते हैं राहों में
फिर खुद ही जल जाते हैं।

जो होते खुद को मिटाने वाले
वे रचते इतिहास नया।

मंत्र नाश का पढ़ा करें कुछ
द्वार द्वार पर जा करके
फूल खिलने वाले रहते
घर घर फूल खिला करके।

(क) सर्जन का नया आकाश कैसे बनता है? 1

(ख) मानव और दानव में क्या अन्तर है? 1

(ग) जीवन में नया विश्वास कैसे आता है? 1

(घ) अत्याचारी का अन्त क्या होता है? 1

(ङ) नाश का मंत्र पढ़ने और फूल खिलाने से क्या तात्पर्य है 1

3. निम्नलिखित में से किसी एक पर निबंध लिखिए। 8

(क) भारत में राष्ट्रीय एकता का स्वरूप

(ख) भारत में बाल मजदूरी समस्या और समाधान

(ग) विज्ञापन के लाभ और हानियाँ

(घ) आतंकवाद समस्या और निराकरण

4. दिल्ली परिवहन निगम के महाप्रबंधक को बसों में सुधार करने हेतु अनुरोध पत्र लिखिए। 5

अथवा

नगर निगम कार्यालय में सहायक पद हेतु स्ववृत्त सहित आवेदन पत्र लिखिए।

5. निम्नलिखित में से किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर दीजिए - 4

(1) भारत में पत्रकारिता की शुरूआत कब और किससे हुई?

(2) इंटरनेट की कोई एक विशेषता लिखिए।

https://www.evidyarthi.in

(3) पत्रकारिता के मूल में कौन सा भाव होता है?

(4) सबसे विख्यात डायरी कौन सी है?

(5) पटकथा का स्त्रोत क्या है?

6. विद्यालय के शैक्षिक-विकास और उन्नति को ध्यान में रखते हुए प्रधानाचार्य ने एक समिति का गठन किया। जांच एवं अध्ययन के पश्चात् समिति की और से प्रतिवेदन प्रस्तुत कीजिए। 3

अथवा

कार्यसूची और कार्यवृत्त को परिभाषित करते हुए दोनों में अन्तर स्पष्ट कीजिए?

7. निम्नलिखित काव्यांशों में से किसी एक की सप्रसंग व्याख्या करें। 6

भौरंन को गुंजन बिहार बन कुंजन में
मंजुल मलारन को गावनो लागत है।
कहैं पद्माकर गुमानहूँ तैं मानहुँ तैं
प्रानहूँ वैं प्यारो मनभावनो लागत है।
मोरन को सोर घनघोर चहुँ ओरन
हिंडोरन को बृन्द छवि छावनो लगत है
नेह सरसावन में मेघ बरसावन में
सावन में झूलिबो सुहावनो लगत है।

अथवा

वज्र का उर एक छोटे अश्रु-कण में धो गलाया,
दे किसी जीवन सुधा दो घूँट मदिरा माँग लाया?
सो गई आँधी मलय की बात का उपधान ले क्या?
विश्व का अभिशाप क्या चिर नींद बनकर पास आया?
अमरता-सुत चाहता क्यों मृत्यु को उर में बसाना?

8. निम्नलिखित काव्यांशों का काव्य सौन्दर्य स्पष्ट कीजिए। 3x2=6

(क) झहरि-झहरि झीनी बूँद हैं परति मानो,
घहरि-घहरि घटा घेरी है, गगन में।
आनि कह्यौ स्याम मो सौं चलौ झूलिबे को आज'
फूली न समानी भई ऐसी हौं मगन मैं।।
चाहत उठ्योई उठि गई सो निगोड़ी नींद,
सोए गए भाग मेरे जानि वा जगन में।
आँख खोलि देखौं तो न घन हैं, न घनश्याम,
वेई छाई बूँदें मेरे आसुँ ह्वै दृगन में।।

https://www.evidyarthi.in

(ख) जागृति नहीं अनिद्रा मेरी,
नहीं गई भव निशा अंधेरी।
अंधकार केंद्रित धरती पर,
देती रही ज्योति चकफेरी!

9. किन्हीं दो प्रश्नों का उत्तर दीजिए। 2×2=4

(क) 'मुरली तऊ गुपालहिं भावति' पद के आधार पर 'गिरिधर नार नवावति' का आशय स्पष्ट कीजिए।

(ख) 'हस्तक्षेप' कविता सत्ता की क्रूरता और उसके कारण पैदा होने वाले प्रतिरोध की कविता है।' - स्पष्ट कीजिए

(ग) 'बादल को घिरते देखा है' कविता के आधार पर बताइए कि बादलों का वर्णन करते हुए कवि को कालिदास की याद क्यों आती है?

10. निम्नलिखित में से किसी एक गद्यांश की सप्रसंग व्याख्या कीजिए। 5

1888 में ज्योतिबा फुले को 'महात्मा' की उपाधि से सम्मानित किया गया तो उन्होंने कहा- "मुझे 'महात्मा' कहकर मेरे संघर्ष को पूर्ण विराम मत दीजिए। जब व्यक्ति मठाधीश बन जाता है तब वह संघर्ष नहीं कर सकता। इसलिए आप सब साधारण जन ही रहने दें, मुझे अपने बीच से अलग न करें।" महात्मा ज्योतिबा फुले की सबसे बड़ी विशेषता यह थी कि वे जो कहते थे, उसे अपने आचरण और व्यवहार में उतारकर दिखाते थे।

अथवा

चाँदनी में एक जादू होता है। लेकिन यह जादू अलग अलग लोगों के लिए अलग अलग है। न मालूम हमारी बात कहाँ से शुरू हुई। मैं डर-डर कर उससे बात करता जा रहा था। कहीं ऐसा न हो कि उसे जाने अनजाने मुझसे कोई चोट पहुँचे क्योंकि उसने अपने विचारों के लिए खून बहाया है, जिन्दगी खत्म की है।

11. किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर दीजिए। 3x2=6

(क) 'दोपहर का भोजन' शीर्षक किस प्रकार से सार्थक है।?

(ख) 'टार्च बेचने वाले' पाठ के आधार पर निम्न कथन को स्पष्ट करें-
"भव्य पुरुष ने कहा- "जहां अंधकार है वहीं प्रकाश है।"

(ग) 'खानाबदोश' कहानी में आज के समाज की किन-किन समस्याओं को रेखांकित किया गया है?

12. देव अथवा महादेवी वर्मा का साहित्यिक परिचय देते हुए उनकी काव्यगत विशेषताओं पर प्रकाश डालिए। 5

अथवा

रांगेय राघव अथवा भारतेंदु हरिश्चन्द्र का साहित्यिक परिचय देते हुए उनकी भाषा-शैलीगत

https://www.evidyarthi.in

विशेषताओं का उल्लेख कीजिए।

13. किन्हीं दो प्रश्नों का उत्तर दीजिए। 4x2=8

(क) राधा के चरित्र की ऐसी कौन सी विशेषताएँ हैं जिन्हें आप अपनाना चाहेंगे।

(ख) किस बात से पता चलता है कि मकबूल को अपने दादा से विशेष लगाव था?

(ग) पाठ 'दिशाहारा' के आधार पर शरत् तथा उसके पिता मोतीलाल के स्वभाव की समानताएं बताइए।

14. (क) 'हुसैन की कहानी अपनी जबानी' आत्मकथा के आधार पर मकबूल के पिता की चारित्रिक विशेषताएँ बताइए। 4

अथवा

'दिशाहारा' के आधार पर निम्न कथन को स्पष्ट कीजिए -

"उस समय वह सोच भी नहीं सकता था कि मनुष्य को दु:ख पहुँचाने के अलावा भी साहित्य का कोई उद्देश्य हो सकता है।"

evidyarthi
https://www.evidyarthi.in

प्रश्न पत्र (हल)

1. हिन्दी में मौलिक नाटकों का अभाव है। इसीलिए हिन्दी रंगमंच पर अनूदित नाटकों की प्रस्तुति की जाती है।

2. कहानी के पात्रों के सपाट संवादों को कह देने भर से वह कथावस्तु नाटक नहीं बन जाती क्योंकि नाटक में कथावस्तु को अभिनय के माध्यम से अभिव्यक्त किया जाता है।

3. रंग नाटक की वस्तु को अभिनय प्रदर्शन, मंच सज्जा और नाटकीय कार्य व्यापार के द्वारा पहचाना जा सकता है।

4. रंग नाटक वह होता है, जिसे मंच पर भली–भाँति खेला जा सके।

5. वर्तमान में हिंदी रंगमंच में गतिविधियाँ बढ़ रही हैं क्योंकि रंग महोत्सवों के अवसर पर रंगमंच पर नाटकों का प्रदर्शन होता है।

6. 'इक' प्रत्यय। नवीन शब्द–साप्ताहिक

6. रंगमंच की दुनिया/रंगमंचीय नाटक की विद्या या अन्य कोई उपयुक्त शीर्षक हो सकता है।

4. (क) जैसे तिनका लाकर चिड़िया अपना घर बनाती है वैसे ही कुछ निर्माण करना भी सर्जन ही करता है।

(ख) मानव सभी दुखी व्यक्तियों के आँसू पोछता है, अर्थात् दुख दूर करने की कोशिश करता है। दानव सभी का नुकसान और रूलाने की सोचता है।

(ग) जब वह कुछ नया सर्जन करता है, निर्माण करता है तब अपनी रचना को देखकर उसके अंदर विश्वास आता है।

(घ) अत्याचारी जब दूसरे के मार्ग में बाधा या रूकावट पैदा करते हैं तो वे स्वंय भी उस बाधा में नष्ट हो जाते हैं।

(ड) नाश का मंत्र पढ़ने का अर्थ है – जो दुराचारी हो और हमेशा दूसरों का बुरा चाहता है। वह नाश का मंत्र पढ़ता रहता है।

फूल खिलाने से तात्पर्य उन व्यक्तियों से है जो हमेशा दूसरे के मार्ग की कठिनाइयों को दूर करने की सोचते हैं।

3. निबंध–

(क) प्रस्तावना

(ख) विषय–वस्तु

evidyarthi

https://www.evidyarthi.in

(ग) भाषा की शुद्धता

(घ) प्रस्तुतिकरण

(ङ) उपसंहार

पत्र

4. सेवा में

महा प्रबंधक

दिल्ली परिवहन निगम

नई दिल्ली।

विषयः बसों में सुधार हेतु।

महोदय / महोदया

मैं आपका ध्यान दिल्ली परिवहन निगम की अपर्याप्त बस सेवा की ओर आकर्षित करना चाहता हूँ। दिल्ली परिवहन निगम की बसों में अभी तक आपेक्षित सुधार नहीं हो पाया है। अन्तर्राज्यीय बस अड्डे के लिए प्रायः बसे नहीं मिलती हैं। जो मिलती हैं उन बसों में सामान लेकर यात्रा करना अत्यन्त कठिन हो गया है। ऑटो रिक्शा वाले ऐसे में मनमाना किराया वसूलते हैं एवं यात्रियों के साथ अच्छे से पेश भी नहीं आते हैं। सामान्य लोगों के लिए तो ये बस ही एक मात्रा सहारा है। हमारे क्षेत्र में तो बसों की संतोषजनक स्थिति भी नहीं है।

आपसे प्रार्थना हैं कि इस क्षेत्र में कम से कम सौ अतिरिक्त बसों की अविलम्ब व्यवस्था की जाए।

आशा है कि आप हमारी प्रार्थना पर शीघ्र अति शीघ्र ध्यान देगें। और समस्या का समाधान करने की कोशिश करेगें।

सधन्यवाद

दिनांक

भवदीय......................

https://www.evidyarthi.in

5. (1) भारत में पत्रकारिता की शुरूआत 1826 में बंगाल गजट से मानी जाती है।

(2) इंटरनेट जनसंचार का सबसे आधुनिक और लोकप्रिय माध्यम है। इसमें रेडियों, टेलीविजन, किताब, सिनेमा यहाँ तक की पुस्तकालय के भी सारे गुण मौजूद है।

(3) पत्रकारिता के मूल में जिज्ञासा का भाव होता है।

(4) सबसे विख्यात डायरी ऐनी फ्रैंक की है। जो निजी डायरी होने के साथ–साथ ऐतिहासिक दस्तावेज़ के रूप में भी जानी जाती है।

(5) पटकथा के मूल स्रोत में सबसे पहले कथा का चयन किया जाता है।

(6) सम्पादन के दो सिद्धान्त–निष्पक्ष, तथ्यों की शुद्धता, वस्तुपरकता, संतुलन आदि है।

6. विभिन्न संस्थाओं एवं कार्यालयों के कार्य सम्पन्न करने के लिए कोई न कोई समिति होती है। यह समिति उस संस्था या कार्यालयों पर नज़र रखती है। आपसी विचार विमर्श एवं निर्णय के द्वारा समिति अपना कार्य करती है। ये निर्णय किसी न किसी निर्धारित बैठक में लिए जाते हैं।

अर्थात् बैठक आयोजित करने से पहले एक क्रमवार सूची बनाई जाती है। यह सूची संक्षिप्त होती है। जिसमें विचारणीय मुद्दों को लिखा जाता है। ये लिखे गए क्रमवार विचारणीय मुद्दे या विषय ही कार्यसूची कहलाते हैं। कार्यसूची में प्रस्तुत विचारणीय मुद्दों को समिति बैठक में सचिव द्वारा प्रस्तुत किया जाता है। समिति के अध्यक्ष की उपस्थिति में सभी सदस्य विचारणीय मुद्दों पर क्रमवार अपने–अपने विचार प्रकट करते हैं। उन मुद्दों का सर्वमान्य हल निकालते हैं और निर्णय लेते हैं। प्रत्येक मुद्दें पर किया गया विचार–विमर्श एवं निर्णय ही कार्यवृत्त कहलाता है। अतः कार्यसूची बैठक में प्रस्तुत किए जाने वाले मुद्दों की क्रमवार सूची है। और कार्यवृत्त प्रत्येक बिन्दु पर किया गया विचार विमर्श एवं लिया गया निर्णय है।

7. प्रसंग सहित व्याख्या

भौंरन को गुंजन बिहार..................... झूलिबो सुहावनो लागत है।

प्रसंग– कवि– रीतिकालीन कवि पद्माकर द्वारा रचित 'प्रकृति और शृंगार' से लिया गया है।

मूल भाव– इस कवित्त में सावन मास की मस्ती और उमंग का वर्णन किया गया है।

https://www.evidyarthi.in

व्याख्याः— सावन मास का वर्णन करते हुए कवि कहते हैं कि सावन मास में प्रकृति में अनोखी उमंग और उल्लास भरी होती है। वन के कोने—कोने में लिखे हुए फूलों पर भौरें अपनी मधुर वाणी में गुंजार करते हैं। वे भौरें ऐसे लगते हैं जैसे कि प्रेमी और प्रेमिका कुंजों में बैठकर प्रेम भरा मधुर मल्हार राग गा रहे हो। भौरों का गुंजना कवि को प्रेमी—प्रेमिका का मल्हार प्रतीत होता है। कवि कहता है कि ऐसे प्रेम के मौसम में यदि प्रेमिका रूठती है, या मान करती है तो ऐसे में दोनों के बीच प्रेम और अधिक बढ़ जाता है। चारों ओर मोरों की आवाज और बादलो की गडगडाहट की आवाज सुनाई देती है। अर्थात् आकाश में छाए बादलों को देख मोर भी खुशी और प्रेम में नाचने लगते हैं। इस मास में वृक्षों की शाखाओं पर झूले डल गए हैं। और इस मास में वर्षा की बूंदों में अपनी प्रिया या अपने प्रिय के साथ झूलना बहुत ही सुन्दर, अच्छा लगता है और ये उनके प्रेम को और प्रगाढ़ करता है। ऐसे में प्रिय के प्रति अनुराग और मोह का भाव बढ़ जाता है।

विशेष—(1) भाषा — ब्रज भाषा

(2) पदावली — कोमलकांत

(3) छंद — कवित्त

(4) रस — संयोग श्रृंगार रस

(5) अनुप्रास अंलकार — बिहार वन, मंजुल मलारन, छवि छावनों वर्णों की आवृत्ति से संगीतात्मकता आ रही है।

8. **काव्य सौन्दर्यः**—

जाग्रति नहीं अनिद्रा मेरी .... रही ज्योति चकफेरी।

भाव पक्षः भाव यह है कि कवि को नींद नहीं आ रही है। नींद न आना जागृति की ओर इशारा नहीं करता बल्कि यहाँ कवि समाज में व्याप्त विसंगतियों से परेशान है और यही परेशानी उसकी नींद ना आने का कारण है। नींद न आना निराशा और अंधकार को बताता है। जब तक धरती पर अन्याय, निराशा, अंधकार रहेगा तब तक ज्योति अर्थात् सब कुछ सही होने की आशा का प्रकाश अंधकार को दूर करने के लिए चारों ओर घूमती रहेगा। वह अंधेरा दूर करना चाहता है, पर दूर हो नहीं रहा है, जिससे ज्योति को चकफेरी देनी पडेगी।

https://www.evidyarthi.in

शिल्प पक्षः

(1)	भव–निशा	–	रुपक अंलकार
(2)	भाषा	–	भावानुकूल, संस्कृत निष्ठ
(3)	बोली	–	खडी बोली
(4)	प्रतीक	–	नए प्रतीकों का प्रयोग
(5)	छंद	–	छंद मुक्त रचना।

9\. (क) गोपियाँ मुरली के प्रति सौतिया डाह का भाव रखती हैं। श्री कृष्ण को मुरली के प्रेम में वशीभूत देखकर सखी कहती हैं कि मुरली का श्री कृष्ण के प्रति व्यवहार अच्छा नहीं है। वह उन्हें एक पाँव पर खडा रखती है। उन पर अपना अत्याधिक अधिकार जताती है। वह उनसे अनेक प्रकार की आज्ञाओं का पालन करवाती है। बाँसुरी बजाते समय उनकी कमर टेढी हो जाती है। वह उनकी गर्दन भी झुकवाती है। वह उनके होठों की शय्या पर वास करके अपने पाव दबवाती है। इतना ही नहीं मुरली बजाते समय श्री कृष्ण की भौहें टेढी हो जाती है। नथुने फूल जाते है। इस प्रकार वह हम पर गुस्सा करवाती है। मुरली ने उनको अपने वश में किया हुआ है। यहाँ पर नारी मनोविज्ञान का चित्रण किया हुआ है।

(ख) 'हस्तक्षेप' कविता में बताया गया है कि जब–जब सत्ता की निरंकुशता, क्रूरता बढ़ती है। तब–तब उसके कारण पैदा होने वाला प्रतिरोध भी बढ़ता जाता है। कवि बताता है कि जनतांत्रिक व्यवस्था में यदि समय–समय पर हस्तक्षेप न किया जाए तो वह व्यवस्था जनतांत्रिक न रहकर निरकुंश हो जाती है। इस कविता में ऐसी व्यवस्था की ओर इशारा किया गया है जहाँ कोई हस्तक्षेप करने की हिम्मत नहीं जुटाता है। वह बताना चाहता है कि हस्तक्षेप मुर्दा भी कर सकता है तो फिर जिन्दा व्यक्ति चुप कैसे रह सकता है। यदि जनतंत्र बचाना है तो हस्तक्षेप करना ही पडेगा।

10\. निम्नलिखित में से किसी एक गद्यांश की सप्रसंग व्याख्या कीजिए।

1888 में ज्योतिबा फुले .... व्यवहार में उतारकर दिखाते थे।

प्रसंग– प्रस्तुत गद्यांश 'सुधा अरोडा' द्वारा रचित 'ज्योतिषा फुले' की जीवनी से लिया गया है।

https://www.evidyarthi.in

संदर्भः— लेखिका ने यहाँ 'ज्योतिषा फुले' के उस वक्तत्व्य का उल्लेख किया है जो उन्होंने उस समय दिया था जब उन्हे महात्मा कहकर पुकारा था।

व्याख्याः—1888 में ज्योतिबा फुले को महात्मा की उपाधि से सम्मानित किया गया। फुले जी ने कहा कि महात्मा की उपाधि मेरे संघर्ष में बाधक बनेगी। उनका तर्क था कि मठाधीश बनने के बाद व्यक्ति आराम पसंद हो जाता है। ऐशो—आराम का जीवन व्यतीत करने वाला व्यक्ति कभी संघर्ष नहीं कर सकता। उनका कहना था कि आप मुझे जैसा हूँ वैसा ही रहने दीजिए मुझे महात्मा या मठाधीश मत बनाओ। मैं अभी अपने जीवन को पूर्ण विराम नहीं देना चाहता मैं अभी समाज की कुरितियों के विरुद्ध संघर्ष करना चाहता हूँ।

विशेषः (1) खडी बोली का प्रयोग

(2) भाषा सरल सहज रोचक

(3) ज्योतिबा फुले की कथनी और करनी में समानता बताकर उनके महान व्यक्तित्व पर प्रकाश डाला गया है।

(4) सादा सरल जीवन जीने की प्ररेणा मिलती है।

(5) 'मठाधीश' शब्द से समाज की वर्ग विषमता का पता चलता है।

11. (क) अमरकांत की कहानी 'दोपहर का भोजन' शीर्षक की दृष्टि से सफल रचना है। इस कहानी का सम्पूर्ण कथानक दोपहर के भोजन पर सिमटा है। सिद्धेश्वरी ने दोपहर का भोजन तैयार कर लिया है। सबसे पहले उसका बड़ा बेटा रामचंद्र भोजन के लिए आता है, उसके बात छोटा बेटा मोहन व फिर मुंशी जी भोजन के लिए आते हैं। इस कहानी के पूरे संवाद दोपहर के भोजन पर केन्द्रीत हैं। पात्रों की सभी वार्ताएँ दोपहर का भोजन करते हुए ही होती हैं। अतः इस कहानी का शीर्षक 'दोपहर का भोजन' पूरी तरह से सार्थक और सटीक है।

(ख) जहाँ अंधकार होता है वहीं प्रकाश भी होता है। प्रकाश है तो अंधकार भी अवश्य ही होगा। जिस प्रकार दुख है तो सुख भी है इसी प्रकार अंधकार है तो प्रकाश भी है। अंधकार का स्थान प्रकाश ग्रहण करता है और प्रकाश का स्थान अंधकार ग्रहण करता है। यही इस कथन का अर्थ भी है। अंधकार में कोई ना कोई प्रकाश की किरण अवश्य होती है। अतः उस किरण को तलाश कर अपने लिए जीवन में मार्ग बनाना चाहिए।

https://www.evidyarthi.in

12. **देव (जवीन / साहित्यिक परिचय)**

जीवन परिचयः— रीतिकालीन रीतिबद्ध कवि। इनका पूरा नाम देवदत्त द्विवेदी था।

जन्मः— सन् 1673 ई0 में इटावा उत्तर प्रदेश में हुआ था। ये एक दरबारी कवि थे। अनेक आश्रयदाताओं के साथ रहे। मुख्यतः भोगीलाल आश्रयदाता के आश्रय में रहे थे।

मृत्युः— सन् 1767 ई0 में इनका देहान्त हो गया।

प्रमुख रचनाः— 'भाव विलास', 'भवानी विलास', 'कुशल विलास', 'रस विलास, 'काव्य—रसायन', प्रेम तरंग प्रेम—चन्द्रिका आदि।

काव्यगत विशेषताएँः— प्रेम और सौन्दर्य के कवि। शृंगार के उदात्त रूप का चित्रण अनुप्रास, यमक प्रिय अंलकार है।

भाषागत विशेषताएँः—

(1) कोमलकान्त पदावली युक्त ब्रज भाषा।

(2) भाषा में प्रवाह और लालित्य गुण।

(3) प्रचालित मुहावरों का भी खूब प्रयोग।

(क) राधा धार्मिक प्रवृत्ति की महिला हैं। वह कम पढ़ी—लिखी होने के बावजूद भी धार्मिक पुस्तकों को पढ़ती है। वह अपनी सास का सम्मान करती है। ऐसा कोई काम नहीं करती है जो उसकी सास को बुरा लगे।

राधा एक हाजिर जवाब महिला है। जब उसकी सास अचानक कमरे में आती है और पूछती है कि ये सब क्या हो रहा है तो वह ही बात को संभालती है जिस कढाई में अंडों का हलुवा बन रहा था वह कहती है कि श्याम के घुटने में क्रिकेट की गेंद लग गई है कढ़ाई में उसके घुटने पर बाँधने के लिए पुलटिस पकाई जा रही है। राधा की हाजिर जवाबी, कर्त्तव्य परायणता, बडों का सम्मान आदि विशेषताएँ हैं जो अपनाने योग्य है।

(ख) लेखक को अपने दादा से काफी लगाव था यह हम इस आधार पर कह सकते हैं कि लेखक अपने दादा की मृत्यु के बाद उनके कमरे में ही बंद रहता था। वह उनके बिस्तर पर ही सोता था। वह वही भूरी अचकन ओढ़कर सोता था जैसे कि वह अपने दादा से ही लिपटकर सोया हो। इन सब बातों से पता चलता है कि उसे अपने दादा से विशेष लगाव था।

https://www.evidyarthi.in

14. (क) 'हुसैन की कहानी अपनी जबानी' आत्मकथा में मकबूल के पिता शिक्षा के हिमायती थे इसलिए उन्होंने मकबूल को पढ़ने के लिए बडौदा भेजा। वे अपने भाइयों की सहायता करने वाले थे। उन्होंने अपने भाइयों को किरयाने की दुकान खुलवाई। जब दुकान न चली तो रेस्तरां खुलवाया। वे कला के पारखी थे। जब मकबूल ने पेंटिंग बनाई तो उन्होंने उसे गले से लगा लिया था। बेंद्रे की सलाह पर उसके लिए बंबई से पेंट और कागज मंगवाया। मकबूल के अब्बा ने मुल्ला–मौलवियों की परवाह किए बिना मकबूल को आगे बढ़ने के लिए प्रोत्साहित किया। वे एक खुले दिमाग के व्यक्ति थे।

https://www.evidyarthi.in